विद्या - भवन बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

वर्ग - प्रथम विषय - हिंदी

एन.सी.ई.आर.टी पर आधारित

दिनांक - 01 - 11- 2021

बालू का घर

सुप्रभात बच्चों ,

आज की कक्षा में आपको अध्ययन करना है जो इस प्रकार है-

पिता जी ने तुषार से कहा-आज रविवार है। आज हम घूमने चलेंगे।

तुषार की बहन शीला ने कहा-पिता जी, समुद्र के किनारे चलते हैं। वहाँ बालू पर मैं चित्र बनाऊँगी।

तुषार ने कहा–हाँ, पिता जी! मैं वहाँ बालू की गेंद बनाऊँगा।

पिता जी दोनों को घुमाने ले चले। साथ में तुषार की माँ भी थीं। चारों समुद्र के किनारे पहुँचे।

तुषार ने बालू की गेंद बनाई। शीला ने बालू पर चिड़िया का चित्र बनाया। फिर शीला ने बालू का घर बनाया। तुषार ने भी बालू का बड़ा घर बनाया।

तुषार ने कहा, शीला, देखो, यह मेरा घर है। यह बहुत बड़ा है।

शीला ने कहा–भैया, देखो, यह मेरा घर है। यह बहुत सुन्दर है।

तुषार बोला–शीला, तुम्हारे घर से मेरा घर बड़ा है।

शीला बोली–भैया, तुम्हारे घर में खिड़की नहीं है। हवा किधर से आएगी? मेरे घर में दो-दो खिड़कियाँ हैं। हवा दोनों ओर से आएगी।

तुषार बोला–मेरे घर का दरवाजा पूरब की ओर है। पूरब में सूरज उगता है। सबसे पहले मेरे घर में धूप आएगी। ताजी हवा आएगी।

शीला ने कहा–घर में खिड़की जरूरी है। खिड़की से हवा आती है।

तुषार ने कहा–मैं घर में खिड़कियाँ बना देता हूँ। उनसे हवा और रोशनी आएगी।

दोनों ने बालू से नए घर बनाए। इस बार दोनों के घर बड़े बने थे।

तुषार ने माँ से कहा–माँ, मेरा घर देखिए। मेरा घर कितना अच्छा बना है। यह बड़ा है। इसमें दादा-दादी रहेंगे।

शीला ने पिता जी से कहा–पिता जी, मेरा घर देखिए। यह कितना बड़ा है। इसमें हवा आती है। धूप भी आती है। इसमें तीन कमरे हैं। एक कमरा दादा-दादी के लिए है।

पिता जी ने कहा–तुम दोनों भाई-बहनों के घर बड़े अच्छे बने हैं। यह सुनकर दादा-दादी खुश होंगे। अब चलो। शाम हो गई है। दादा-दादी इन्तजार कर रहे होंगे।

तुषार और शीला ने कई छोटी-छोटी सीपियाँ जमा कर लीं। फिर वे दोनों सीपियाँ लेकर घर को लौटे।

गृहकार्य :-

दिए , गए अध्ययन सामग्री को पूरे मनोयोग से पढ़ें तथा समझने का प्रयास करें-

****

ज्योति